Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET

समाजशास्त्र

National Testing Agency (NTA)

पेपर 2 || भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

UGC NET पेपर – 2 (समाजशास्त्र)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	इकाई - I : समाजशास्त्रीय सिद्धान्त	
1.	**शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ** ➢ इमाइल दुर्खीम ➢ मैक्स वेबर ➢ कार्ल मार्क्स	1
2.	**संरचना- प्रकार्यवाद एवं संरचनावाद** ➢ ब्रोनिस्लो मेलिनोस्की, ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन ➢ टालकॉट पारसंस, रॉबर्ट के. मर्टन ➢ क्लॉड लेवी स्ट्रास	21
3.	**व्याख्यात्मक एवं निर्वचनात्मक परम्पराएं** ➢ जी.एच.मीड, कार्ल मैनहेम ➢ अल्फ्रेड शुट्ज़, हेरोल्ड गारफिंकल ➢ इरविंग गौफ्फमैन, क्लिफ़र्ड गीर्ज	48
4.	**उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तर संरचनावाद तथा उत्तर उपनिवेशवाद** ➢ एडवर्ड सेड, पियरे बोर्दियू ➢ मिशेल फूको, युर्गेन हेबरमास ➢ एंथोनी गिडेंस, मैनुअल कैसेल्स	85
5.	**भारतीय चिंतक** ➢ एम.के. गांधी ➢ बी.आर. अम्बेडकर ➢ राधाकमल मुखर्जी ➢ जी.एस.घुर्ये ➢ एम.एन.श्रीनिवास ➢ इरावती कर्वे	120
	इकाई - II : शोध प्रविधियां और विधियां	
6.	**सामाजिक यथार्थ की अवधारणा** ➢ विज्ञान का दर्शन ➢ सामाजिक विज्ञान में वैज्ञानिक विधि और ज्ञानमीमांसा ➢ व्याख्यात्मक परम्पराएं, सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता तथा परावर्तकता ➢ आचारशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र	127
7.	**शोध अभिकल्प निरूपण** ➢ सामाजिक विज्ञान शोध, डाटा और प्रलेख पठन। ➢ आगमन और निगमन, तथ्य, संबोध और सिद्धान्त ➢ प्राक्कल्पना, शोध प्रश्न, उद्देश्य	150
8.	**परिमाणात्मक तथा गुणात्मक विधियां** ➢ नृजातिवर्णन, सर्वेक्षण विधि ➢ ऐतिहासिक विधि, तुलनात्मक विधि	173
9.	**तकनीकें** ➢ निदर्शन ➢ प्रश्नावली और अनुसूची ➢ सांख्यिकीय विश्लेषण ➢ अवलोकन, साक्षात्कार और वैयक्तिक अध्ययन ➢ निर्वचन, आंकड़ाविश्लेषण और प्रतिवेदन लेखन	186

I UNIT

समाजशास्त्रीय सिद्धांत

1: समाजशास्त्रीय सिद्धांत और एमिल दुर्खीम का परिचय

1. समाजशास्त्रीय सिद्धांत का अवलोकन

1.1 परिभाषा और दायरा

समाजशास्त्रीय सिद्धांत परस्पर संबंधित अवधारणाओं, प्रस्तावों और मॉडलों के एक समूह को संदर्भित करता है जो सामाजिक घटनाओं, जैसे कि संस्थाओं, व्यवहारों और सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करते हैं। सिद्धांत समाजशास्त्रियों को अनुभवजन्य डेटा की व्याख्या करने, सामाजिक रुझानों की भविष्यवाणी करने और व्यक्तियों और समाज के बीच परस्पर क्रिया को समझने के लिए उपकरण प्रदान करते हैं। समाजशास्त्रीय सिद्धांत का दायरा इस प्रकार है:

- **सूक्ष्म-स्तरीय विश्लेषण** : व्यक्तिगत अंतःक्रियाएं (उदाहरणार्थ, जी.एच. मीड का प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद)।
- **मेसो -स्तरीय विश्लेषण** : समूह गतिशीलता और संस्थाएं (उदाहरण के लिए, रॉबर्ट के. मेर्टन के मध्य-श्रेणी सिद्धांत)।
- **वृहद स्तर विश्लेषण** : सामाजिक संरचनाएं और ऐतिहासिक प्रक्रियाएं (उदाहरणार्थ, कार्ल मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद)।

समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को मोटे तौर पर निम्नलिखित में वर्गीकृत किया गया है:

- **शास्त्रीय सिद्धांत** : दुर्खीम, वेबर और मार्क्स द्वारा आधारभूत कार्य, जो सामाजिक व्यवस्था, संघर्ष और अर्थ पर बल देते हैं।
- **संरचनात्मक-कार्यात्मकतावाद** : समाज को परस्पर संबंधित भागों की एक प्रणाली के रूप में देखता है (उदाहरण के लिए, टैल्कॉट पार्सन्स का AGIL मॉडल)।
- **व्याख्यात्मक सिद्धांत** : व्यक्तिपरक अर्थों और अंतःक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं (उदाहरण के लिए, एर्विंग गोफमैन की नाट्यशास्त्र)।
- **उत्तरआधुनिक और उत्तरऔपनिवेशिक सिद्धांत** : आधुनिकता और वैश्विक असमानताओं की आलोचना (उदाहरण के लिए, एडवर्ड सईद का ओरिएंटलिज्म)।
- **भारतीय समाजशास्त्रीय विचार** : भारतीय समाज में समाजशास्त्र को प्रासंगिक बनाता है (उदाहरण के लिए, एमएन श्रीनिवास का संस्कृतीकरण)।

1.2 प्रासंगिकता

- **संकल्पनात्मक स्पष्टता** : प्रमुख संकल्पनाओं की परिभाषाएँ और अनुप्रयोग (जैसे, सामाजिक तथ्य, विसंगति)।
- **विचारक-विशिष्ट ज्ञान** : दुर्खीम जैसे विचारकों के योगदान, कार्यप्रणाली और आलोचनाएँ।
- **तुलनात्मक विश्लेषण** : विचारकों के बीच मतभेद (जैसे, धर्म पर दुर्खीम बनाम वेबर)।
- **समकालीन प्रासंगिकता** : शास्त्रीय सिद्धांतों को आधुनिक मुद्दों पर लागू करना (उदाहरण के लिए, शहरी समाजों में दुर्खीम की अराजकता)।

हाल के रुझान (2020-2025) शास्त्रीय सिद्धांतों को वर्तमान सामाजिक मुद्दों, जैसे वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और सामाजिक असमानता से जोड़ने वाले प्रश्नों में वृद्धि दिखाते हैं, जिससे ऐतिहासिक संदर्भ और आधुनिक अनुप्रयोगों दोनों को समझना आवश्यक हो जाता है।

1.3 संरचना

- **शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परंपराएँ** : एमिल दुर्खीम, मैक्स वेबर, कार्ल मार्क्स।
- **संरचना-कार्यात्मकता और संरचनावाद** : ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की, एआर रैडक्लिफ-ब्राउन, टैल्कॉट पार्सन्स, रॉबर्ट के. मेर्टन, क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस।
- **हेर्मेनेयुटिक और व्याख्यात्मक परंपराएँ** : जीएच मीड, कार्ल मैनहेम, अल्फ्रेड शूत्ज़ , हेरोल्ड गारफिंकेल , इरविंग गोफमैन , क्लिफोर्ड गीर्टज़।
- **उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तर संरचनावाद और उत्तर उपनिवेशवाद** : एडवर्ड सईद, पियरे बौर्डियू, मिशेल फौकॉल्ट, जुर्गेन हेबरमास , एंथनी गिडेंस , मैनुअल कास्टेल्स।
- **भारतीय विचारक** : एमके गांधी, बीआर अंबेडकर , राधा कमल मुखर्जी, जीएस घुर्ये , एमएन श्रीनिवास , इरावती कर्वे .

यह भाग शास्त्रीय परंपरा के प्रथम भाग पर केंद्रित है, विशेष रूप से एमिल दुर्खीम पर, जिनकी अवधारणाएं आधारभूत हैं और जिनका बार-बार परीक्षण किया जाता है।

2. एमिल दुर्खीम: जीवन और संदर्भ

2.1 जीवनी अवलोकन

- **जन्म** : 15 अप्रैल, 1858, एपिनल , फ्रांस में।
- **मृत्यु** : 15 नवम्बर 1917, पेरिस, फ्रांस में।
- **शिक्षा** : इकोले में अध्ययन किया नॉर्मले सुपीरियेर , प्रत्यक्षवाद और कॉम्टे के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभावित थे।
- **प्रमुख कार्य** :
  - समाज में श्रम का विभाजन (1893).
  - समाजशास्त्रीय विधि के नियम (1895).
  - आत्महत्या: समाजशास्त्र में एक अध्ययन (1897).
  - धार्मिक जीवन के प्राथमिक रूप (1912).
- **योगदान** : समाजशास्त्र को एक अलग शैक्षणिक अनुशासन के रूप में स्थापित किया, जिसमें अनुभवजन्य तरीकों और सामाजिक सामंजस्य पर जोर दिया गया।

दुर्खीम यूरोप में तेजी से हो रहे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और सामाजिक उथल-पुथल के दौर में रहे, जिसने सामाजिक व्यवस्था और एकीकरण पर उनका ध्यान केंद्रित किया। उनके प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण का उद्देश्य समाज का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करना था, जो समाजशास्त्र को दर्शन और मनोविज्ञान से अलग करता था।

2.2 बौद्धिक प्रभाव

- **ऑगस्टे कॉम्टे** : डर्कहेम के प्रत्यक्षवाद और समाजशास्त्र को एक विज्ञान के रूप में मानने की प्रेरणा।
- **हर्बर्ट स्पेंसर** : सामाजिक विकास पर डर्कहेम के विचारों को प्रभावित किया, हालांकि डर्कहेम ने स्पेंसर के व्यक्तिवाद की आलोचना की।
- **फ्रांसीसी ज्ञानोदय** : तर्क और अनुभवजन्य अवलोकन पर जोर दिया गया, जिसने दुर्खीम की कार्यप्रणाली को आकार दिया।

दुर्खीम के कार्य ने कार्यात्मकतावाद की आधारशिला रखी और टैल्कॉट पार्सन्स और रॉबर्ट के. मेर्टन जैसे बाद के विचारकों को प्रभावित किया।

3. दुर्खीम की कार्यप्रणाली

3.1 समाजशास्त्र एक विज्ञान के रूप में

द रूल्स ऑफ़ सोशियोलॉजिकल मेथड (1895) में , दुर्खीम ने तर्क दिया कि समाजशास्त्र एक कठोर, वैज्ञानिक अनुशासन होना चाहिए। उनकी कार्यप्रणाली में शामिल हैं:

- **अनुभवजन्य अवलोकन** : अवलोकनीय डेटा (जैसे, आत्महत्या दर) के माध्यम से सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करें।
- **वस्तुनिष्ठता** : समाजशास्त्रियों को व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से बचना चाहिए और समाज का अध्ययन एक बाह्य वास्तविकता के रूप में करना चाहिए।
- **तुलनात्मक विधि** : पैटर्न की पहचान करने के लिए विभिन्न समाजों में भिन्नताओं का विश्लेषण करें (उदाहरण के लिए, प्रोटेस्टेंट बनाम कैथोलिक क्षेत्रों में आत्महत्या दर की तुलना करना)।

3.2 सामाजिक तथ्य

सामाजिक तथ्यों की अवधारणा पेश की , जिसे "कार्य करने, सोचने और महसूस करने के तरीके, व्यक्ति के लिए बाहरी, और जबरदस्ती की शक्ति से संपन्न, जिसके कारण वे उसे नियंत्रित करते हैं" (समाजशास्त्रीय विधि के नियम) के रूप में परिभाषित किया गया है ।

सामाजिक तथ्यों की विशेषताएँ :

- **बाह्यता** : व्यक्तिगत चेतना के बाहर अस्तित्व (जैसे, कानून, रीति-रिवाज)।
- **दबाव** : व्यक्तियों पर अनुरूपता के लिए दबाव डालना (जैसे, सामाजिक मानदंड)।
- **सामान्यता** : समाज में व्यापक (जैसे, भाषा)।

उदाहरण :

- कानूनी प्रणालियाँ: व्यक्तियों को व्यक्तिगत विश्वासों की परवाह किए बिना कानूनों का पालन करना चाहिए।
- सांस्कृतिक मानदंड: ड्रेस कोड या अभिवादन व्यवहार को आकार देते हैं।

अनुप्रयोग :

- सामाजिक तथ्य सामूहिक व्यवहार की व्याख्या करते हैं, जैसे कि विभिन्न समाजों में आत्महत्या की दरें अलग-अलग क्यों होती हैं।
- आधुनिक संदर्भों में, सामाजिक तथ्यों में डिजिटल मानदंड (जैसे, सोशल मीडिया शिष्टाचार) शामिल हैं।

आलोचनाएँ :

- सामाजिक नियतिवाद पर अत्यधिक जोर दिया गया है तथा व्यक्तिगत एजेंसी की उपेक्षा की गई है।
- सामाजिक और मनोवैज्ञानिक तथ्यों के बीच अस्पष्ट अंतर।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न अक्सर उम्मीदवारों से सामाजिक तथ्यों को परिभाषित करने या उन्हें मनोवैज्ञानिक तथ्यों से अलग करने के लिए कहते हैं (उदाहरण के लिए, जून 2019, दिसंबर 2021)।

4. प्रमुख अवधारणाएँ और सिद्धांत

समाज में श्रम विभाजन

द डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसाइटी (1893) में , दुर्खीम ने पता लगाया कि कैसे समाज बढ़ती विशेषज्ञता के बीच सामंजस्य बनाए रखता है। उन्होंने दो प्रकार की सामाजिक एकजुटता की तुलना की:

4.1.1 यांत्रिक एकजुटता

- **परिभाषा** : पारंपरिक, समरूप समाजों में साझा विश्वासों, मूल्यों और सामूहिक चेतना पर आधारित सामाजिक सामंजस्य।
- **विशेषताएँ** :
  - मजबूत सामूहिक चेतना (साझा मानदंड और मूल्य)।
  - श्रम का निम्न विभाजन; व्यक्ति समान कार्य करते हैं (उदाहरणार्थ, कृषि प्रधान समाज में किसान)।
  - दमनकारी कानून अनुरूपता बनाए रखने के लिए विचलन को दंडित करते हैं।
- **उदाहरण** : एक समान धार्मिक मान्यताओं वाले जनजातीय समाज या मध्ययुगीन गाँव।

4.1.2 जैविक एकजुटता

- **परिभाषा** : आधुनिक, जटिल समाजों में अन्योन्याश्रितता और विशेषज्ञता पर आधारित सामाजिक सामंजस्य।
- **विशेषताएँ** :
  - विविधता के कारण कमजोर सामूहिक चेतना।
  - श्रम का उच्च विभाजन; व्यक्ति विशिष्ट भूमिकाएं निभाते हैं (जैसे, डॉक्टर, शिक्षक)।
  - प्रतिपूरक कानून अनुबंधों और सहयोग के माध्यम से सामाजिक सद्भाव बहाल करते हैं।
- **उदाहरण** : परस्पर संबद्ध भूमिकाओं वाले औद्योगिक समाज (जैसे, शहरी भारत)।

4.1.3 संक्रमण और विसंगति

- दुर्खीम ने तर्क दिया कि जनसंख्या वृद्धि और औद्योगीकरण के कारण समाज यांत्रिक एकजुटता से जैविक एकजुटता की ओर विकसित होता है।
- **एनोमी (Anomie)** : तीव्र सामाजिक परिवर्तन के दौरान उत्पन्न होने वाली मानदंडहीनता की स्थिति, जब पुराने मानदंड कमजोर पड़ जाते हैं, तथा नए मानदंड अभी तक स्थापित नहीं हुए होते हैं।
  - उदाहरण: भारत में शहरी प्रवास के कारण सामुदायिक संबंध कमजोर हो रहे हैं।
  - आधुनिक प्रासंगिकता: एनोमी गिग अर्थव्यवस्थाओं या डिजिटल समाजों में अलगाव की व्याख्या करता है।

दृश्य सहायता : श्रम विभाजन का प्रवाह चार्ट

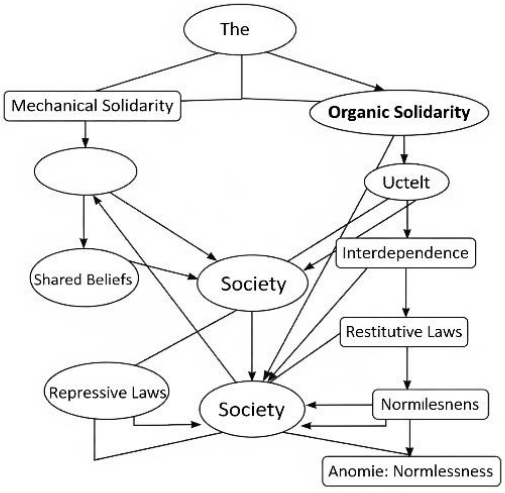

आलोचनाएँ :

- जैविक एकजुटता की स्थिरता के बारे में अति आशावादी।
- विशिष्ट भूमिकाओं में शक्ति असमानताओं की उपेक्षा करता है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न यांत्रिक और जैविक एकजुटता या विसंगति के कारणों के बीच अंतर का परीक्षण करते हैं (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2020, जून 2023)।

4.2 आत्महत्या

आत्महत्या: समाजशास्त्र में एक अध्ययन (1897) में , दुर्खीम ने सांख्यिकीय डेटा का उपयोग करके यह प्रदर्शित किया कि आत्महत्या, जिसे अक्सर एक व्यक्तिगत कार्य के रूप में देखा जाता है, सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है। उन्होंने सामाजिक एकीकरण और विनियमन के स्तरों के आधार पर आत्महत्या के चार प्रकारों की पहचान की:

4.2.1 अहंकारी आत्महत्या

- **कारण** : सामाजिक एकीकरण कम होना; व्यक्ति समाज से अलग-थलग महसूस करते हैं।
- **उदाहरण** : कैथोलिकों की तुलना में प्रोटेस्टेंटों (कम एकीकृत) में आत्महत्या की दर अधिक है।
- **आधुनिक संदर्भ** : शहरी या डिजिटल समाजों में अकेलापन।

4.2.2 परोपकारी आत्महत्या

- **कारण** : अत्यधिक सामाजिक एकीकरण; व्यक्ति सामूहिकता के लिए स्वयं का बलिदान कर देते हैं।
- **उदाहरण** : अपने देश के लिए मरते सैनिक या भारत में पारंपरिक सती प्रथा।
- **आधुनिक संदर्भ** : चरम विचारधारा वाले समूहों में आत्मघाती हमलावर।

4.2.3 एनोमिक आत्महत्या

- **कारण** : कम सामाजिक विनियमन; तीव्र सामाजिक परिवर्तन मानदंडों को बाधित करता है।
- **उदाहरण** : आत्महत्याओं को जन्म देने वाले आर्थिक संकट (जैसे, 2008 की वैश्विक मंदी)।
- **आधुनिक संदर्भ** : भारत के अनौपचारिक क्षेत्र में नौकरी की असुरक्षा।

4.2.4 भाग्यवादी आत्महत्या

- **कारण** : अत्यधिक सामाजिक विनियमन; व्यक्ति कठोर मानदंडों से उत्पीड़ित महसूस करते हैं।
- **उदाहरण** : बिना स्वायत्तता वाले गुलाम या कैदी।
- **आधुनिक संदर्भ** : अत्यधिक नियंत्रित वातावरण में आत्महत्याएं (जैसे, दमनकारी कार्यस्थल)।

दृश्य सहायता : आत्महत्या के प्रकारों की तुलना करने वाली तालिका

प्रकार	कारण	एकीकरण/विनियमन	उदाहरण
अहंमानी	कम एकीकरण	कम एकीकरण	पृथक व्यक्ति
परोपकारी	उच्च एकीकरण	उच्च एकीकरण	सैनिक, सती
एनोमिक	कम विनियमन	कम विनियमन	आर्थिक संकट के शिकार
भाग्यवादी	उच्च विनियमन	उच्च विनियमन	गुलाम, उत्पीड़ित श्रमिक

कार्यप्रणाली : दुर्खीम ने सामाजिक कारणों को स्थापित करने के लिए सांख्यिकीय सहसंबंधों का उपयोग करते हुए, धर्मों, व्यवसायों और वैवाहिक स्थितियों के आधार पर आत्महत्या की दरों का विश्लेषण किया।

अनुप्रयोग :

- शहरी भारत में अराजकता और कम एकीकरण के कारण बढ़ती आत्महत्या दरों की व्याख्या करता है।
- सामाजिक समर्थन पर जोर देते हुए मानसिक स्वास्थ्य नीतियों की जानकारी देता है।

आलोचनाएँ :

- सरकारी आंकड़ों पर अत्यधिक निर्भरता, जो गलत भी हो सकते हैं।
- आत्महत्या में मनोवैज्ञानिक कारकों की उपेक्षा की जाती है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न आत्महत्या के प्रकारों या दुर्खीम की कार्यप्रणाली पर केंद्रित होते हैं (उदाहरण के लिए, जून 2018, दिसंबर 2022)।

4.3 धर्म और सामाजिक एकीकरण

द एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ रिलीजियस लाइफ (1912) में , दुर्खीम ने तर्क दिया कि धर्म एक सामाजिक संस्था है जो सामूहिक चेतना और सामाजिक सामंजस्य को मजबूत करती है।

4.3.1 प्रमुख अवधारणाएँ

- **पवित्र बनाम अपवित्र** :
  - **पवित्र** : अलग रखी गई और पूजनीय वस्तुएं, अनुष्ठान या विश्वास (जैसे, देवता, मंदिर)।
  - **अपवित्र** : जीवन के रोज़मर्रा के, सांसारिक पहलू (जैसे, काम, भोजन)।
  - धर्म पवित्र और अपवित्र में अंतर करता है, तथा साझा प्रतीकों का निर्माण करता है।

- **टोटेमिज्म** : दुर्खीम ने ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी टोटेमिज्म का अध्ययन किया और तर्क दिया कि टोटेम कबीले का प्रतीक है, जो समूह की पहचान को मजबूत करता है।
- **सामूहिक चेतना** : धर्म साझा विश्वासों को मजबूत करता है, समाज को एकजुट करता है।

4.3.2 धर्म के कार्य

- **सामाजिक एकजुटता** : अनुष्ठान और विश्वास व्यक्तियों को एकीकृत करते हैं (उदाहरण, दिवाली जैसे त्यौहार)।
- **सामाजिक नियंत्रण** : धार्मिक मानदंड व्यवहार को नियंत्रित करते हैं (जैसे, नैतिक संहिता)।
- **अर्थ-निर्माण** : जीवन की अनिश्चितताओं के लिए स्पष्टीकरण प्रदान करता है।

4.3.3 आधुनिक प्रासंगिकता

- धर्मनिरपेक्ष संस्थाएं (जैसे, राष्ट्रवाद, खेल प्रशंसक) भी इसी प्रकार के एकीकृत कार्य करती हैं।
- भारत में धर्म सामाजिक पहचान को आकार देता है (जैसे, जाति-आधारित अनुष्ठान)।

दृश्य सहायता : धर्म की भूमिका का आरेख

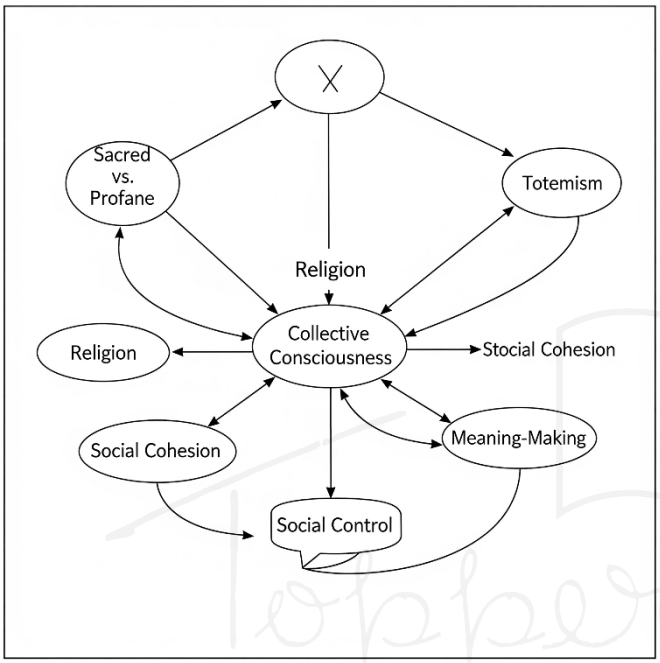

आलोचनाएँ :

- धर्म की एकीकृत भूमिका पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, तथा संघर्ष (जैसे, धार्मिक हिंसा) को नजरअंदाज किया जाता है।
- टोटेमवाद पर यूरोकेन्द्रित ध्यान सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न पवित्र-अपवित्र भेद या धर्म के कार्यों का परीक्षण करते हैं (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2019, जून 2024)।

5. समाजशास्त्र में दुर्खीम का योगदान

5.1 समाजशास्त्र को एक विषय के रूप में स्थापित करना

- दुर्खीम ने बोर्डो विश्वविद्यालय में पहला समाजशास्त्र विभाग स्थापित किया और L'Année प्रकाशित किया सोशियोलॉजिक , समाजशास्त्रीय अनुसंधान को बढ़ावा देने वाली पत्रिका।
- अनुभवजन्य तरीकों पर उनके जोर ने समाजशास्त्र को दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान से अलग कर दिया।

5.2 कार्यात्मकता पर प्रभाव

- सामाजिक सामंजस्य और संस्थाओं पर दुर्खीम के फोकस ने संरचनात्मक-कार्यात्मकतावाद (जैसे, पार्सन्स, मेर्टन) को प्रेरित किया।
- एनोमी और सामाजिक एकीकरण जैसी अवधारणाएं कार्यात्मक विश्लेषणों के लिए केंद्रीय बनी हुई हैं।

5.3 आधुनिक समाजशास्त्र में अनुप्रयोग

- **अपराधशास्त्र** : एनोमी तेजी से बदलते समाजों में विचलित व्यवहार की व्याख्या करता है।
- **शिक्षा** : नैतिक शिक्षा पर दुर्खीम का कार्य समाजीकरण सिद्धांतों को सूचित करता है।
- **शहरी समाजशास्त्र** : विसंगति और एकीकरण भारत में शहरी अलगाव पर लागू होते हैं।

5.4 दुर्खीम की आलोचना

- **सामाजिक नियतिवाद** : सामाजिक ताकतों पर अत्यधिक जोर देता है, व्यक्तिगत एजेंसी की उपेक्षा करता है।
- **रूढ़िवाद** : आलोचकों का तर्क है कि दुर्खीम का व्यवस्था पर ध्यान यथास्थिति का समर्थन करता है।
- **सीमित दायरा** : मार्क्स या वेबर के विपरीत, संघर्ष और शक्ति पर कम ध्यान।

6. पीवाईक्यू विश्लेषण (2015-2025)

ugcnet.nta.ac.in से प्राप्त PYQ के आधार पर, दुर्खीम एक उच्च-वेटेज विचारक है, जिसमें प्रति परीक्षा 3-5 प्रश्न होते हैं। सामान्य प्रश्न प्रकारों में शामिल हैं:

- सामाजिक तथ्य, अराजकता और एकजुटता की परिभाषाएँ और अनुप्रयोग।
- आत्महत्या के प्रकारों के बीच अंतर.
- अन्य विचारकों के साथ तुलना (जैसे, धर्म पर दुर्खीम बनाम वेबर)।

6.1 नमूना PYQs

- **जून 2018** : 'सामाजिक तथ्य' से दुर्खीम का क्या तात्पर्य था?
  - **उत्तर** : सामाजिक तथ्य कार्य करने, सोचने और महसूस करने के तरीके हैं जो व्यक्ति के लिए बाहरी, बाध्यकारी और समाज के भीतर सामान्य हैं। उदाहरणों में कानून और रीति-रिवाज शामिल हैं। दुर्खीम ने उनके अध्ययन को वस्तुनिष्ठ घटना के रूप में महत्व दिया।
  - **स्पष्टीकरण** : यह दुर्खीम की कार्यप्रणाली और मूल अवधारणा की समझ का परीक्षण करता है।
- **दिसंबर 2019** : किस प्रकार की आत्महत्या अत्यधिक सामाजिक एकीकरण का परिणाम है?
  - **उत्तर** : परोपकारी आत्महत्या।
  - **स्पष्टीकरण** : आत्महत्या के प्रकार, एक आवर्ती विषय के ज्ञान का परीक्षण करता है।
- **जून 2021** : दुर्खीम की एनोमी की अवधारणा आधुनिक शहरी समाजों से कैसे संबंधित है?
  - **उत्तर** : एनोमी, मानदंडहीनता की स्थिति, तब होती है जब तेज़ सामाजिक परिवर्तन मानदंडों को बाधित करता है, जिससे अलगाव पैदा होता है। शहरी समाजों में, प्रवास और आर्थिक अस्थिरता एनोमी को बढ़ाती है।
  - **व्याख्या** : शास्त्रीय सिद्धांतों को समकालीन मुद्दों से जोड़ने वाले हालिया रुझानों को दर्शाता है।
- **दिसंबर 2022** : यांत्रिक और जैविक एकजुटता के बीच अंतर बताएं।
  - **उत्तर** : यांत्रिक एकजुटता पारंपरिक समाजों में दमनकारी कानूनों के साथ साझा विश्वासों पर आधारित होती है, जबकि जैविक एकजुटता आधुनिक, विशिष्ट समाजों में प्रतिकारी कानूनों के साथ परस्पर निर्भरता से उत्पन्न होती है।
  - **स्पष्टीकरण** : श्रम विभाजन से मूल अवधारणाओं का परीक्षण करता है ।
- **जून 2024** : दुर्खीम के सामाजिक एकीकरण के सिद्धांत में धर्म की क्या भूमिका है?
  - **उत्तर** : धर्म साझा विश्वासों और अनुष्ठानों के माध्यम से सामूहिक चेतना को मजबूत करता है, पवित्र को अपवित्र से अलग करता है और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है।
  - **स्पष्टीकरण** : प्राथमिक रूपों की समझ का परीक्षण करता है ।

6.2 रुझान और अपेक्षित प्रश्न

- **रुझान** : वैश्वीकरण और डिजिटल समाजों के लिए एनोमी की प्रासंगिकता पर बढ़ता ध्यान (2020-2025)। दुर्खीम की एकजुटता की तुलना वेबर के युक्तिकरण से करने वाले प्रश्न आम हैं।
- **अपेक्षित प्रश्न** :
  - आत्महत्या के अध्ययन में डर्कहेम की कार्यप्रणाली की व्याख्या करें।
  - आधुनिक भारत में विसंगति किस प्रकार विचलन में योगदान देती है?
  - सामाजिक परिवर्तन पर डर्कहेम और मार्क्स के विचारों की तुलना करें।

7. संशोधन के लिए मुख्य बिंदु

- **सामाजिक तथ्य** : कार्य करने/सोचने के बाह्य, दबावपूर्ण, सामान्य तरीके (जैसे, कानून, मानदंड)।
- **यांत्रिक एकजुटता** : पारंपरिक समाजों में साझा विश्वासों के माध्यम से सामंजस्य।
- **जैविक एकजुटता** : आधुनिक समाजों में अन्योन्याश्रितता के माध्यम से सामंजस्य।
- **एनोमी (Anomie**) : तीव्र सामाजिक परिवर्तन के कारण मानदंडहीनता।
- **आत्महत्या के प्रकार** : अहंकारी (कम एकीकरण), परोपकारी (उच्च एकीकरण), असामाजिक (कम विनियमन), भाग्यवादी (उच्च विनियमन)।
- **धर्म** : पवित्र-अपवित्र भेद के माध्यम से सामूहिक चेतना को मजबूत करता है।
- **कार्यप्रणाली** : अनुभवजन्य, वस्तुनिष्ठ, तुलनात्मक विधियों का उपयोग करने वाले विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र।

8. स्मृति सहायक और स्मृति सहायक

- **आत्महत्या के प्रकारों के लिए स्मृति सहायक** : **ईएएएफ** (अहंकारी, परोपकारी, असामाजिक, भाग्यवादी)।
  - **ई** : अहंकारी - एकाकी व्यक्ति।
  - **उत्तर** : परोपकारी - अत्यधिक एकीकृत।
  - **A** : एनोमिक - मानदंडहीन अराजकता।

- **एफ** : भाग्यवादी - अति-विनियमित उत्पीड़न।
- **एकजुटता के लिए स्मृति सहायक** : **एमओ** (मैकेनिकल = पुराना, साझा विश्वास; ऑर्गेनिक = आधुनिक, अन्योन्याश्रितता)।
- **सामाजिक तथ्यों के लिए स्मृति सहायक** : **ईसीजी** (बाह्य, बाध्यकारी, सामान्य)।

9. अभ्यास प्रश्न (एमसीक्यू)

- **दुर्खीम के अनुसार सामाजिक तथ्य क्या है?**
  a) व्यक्तिगत विचार और भावनाएँ
  b) अभिनय के बाहरी, दबावपूर्ण तरीके
  c) जैविक प्रवृत्ति
  d) आर्थिक लेनदेन
  उत्तर : b) अभिनय के बाहरी, दबावपूर्ण तरीके
  स्पष्टीकरण : सामाजिक तथ्य व्यक्तियों के लिए बाहरी, दबावपूर्ण और सामान्य होते हैं (जैसे, मानदंड)।
- **आधुनिक औद्योगिक समाजों की विशेषता किस प्रकार की एकजुटता है?**
  a) यांत्रिक
  b) कार्बनिक
  c) गैर-आर्थिक
  d) भाग्यवादी
  उत्तर : b) कार्बनिक
  स्पष्टीकरण : कार्बनिक एकजुटता विशिष्ट समाजों में अन्योन्याश्रितता से उत्पन्न होती है।
- **एनोमिक आत्महत्या का परिणाम है :**
  a) कम सामाजिक एकीकरण
  b) उच्च सामाजिक विनियमन
  c) कम सामाजिक विनियमन
  d) उच्च सामाजिक एकीकरण
  उत्तर : c) कम सामाजिक विनियमन
  स्पष्टीकरण : सामाजिक परिवर्तन के दौरान आदर्शहीनता के कारण एनोमिक आत्महत्या होती है।
- **दुर्खीम के विचार में, पवित्र है:**
  a) रोजमर्रा की वस्तुएं
  b) अलग रखी गई और पूजनीय वस्तुएं
  c) व्यक्तिगत विश्वास
  d) आर्थिक संसाधन
  उत्तर : b) अलग रखी गई और पूजनीय वस्तुएं
  व्याख्या : धर्म में पवित्र वस्तुएं (जैसे, देवता) अपवित्र (सांसारिक) के विपरीत हैं।
- **दुर्खीम के आत्महत्या के अध्ययन में मुख्य रूप से उपयोग किया गया :**
  a) नृवंशविज्ञान
  b) सांख्यिकीय विश्लेषण
  c) साक्षात्कार
  d) ऐतिहासिक विश्लेषण
  उत्तर : b) सांख्यिकीय विश्लेषण
  स्पष्टीकरण : दुर्खीम ने सामाजिक कारणों की पहचान करने के लिए आत्महत्या दर का विश्लेषण किया।

11. हालिया घटनाक्रम

- **डिजिटल समाजों में एनोमी : दुर्खीम की एनोमी की अवधारणा को सामाजिक मीडिया के सामान्यताहीनता (जैसे,** साइबर बदमाशी , ऑनलाइन अलगाव) पर प्रभाव के लिए लागू किया जाता है ।
- **भारत में धर्म** : दुर्खीम का पवित्र-अपवित्र भेद धार्मिक त्योहारों (जैसे, कुंभ) के बने रहने की व्याख्या करता है मेला) विविध समुदायों को एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
- **शहरी समाजशास्त्र** : 2025 तक भारत के महानगरों (जैसे, मुंबई, दिल्ली) में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों का अध्ययन करने के लिए एनोमी और कम एकीकरण का उपयोग किया जाता है।

2: मैक्स वेबर

परिचय

1. मैक्स वेबर: जीवन और संदर्भ

1.1 जीवनी अवलोकन

- **जन्म** : 21 अप्रैल, 1864, एरफ़र्ट, प्रशिया (आधुनिक जर्मनी)।
- **मृत्यु** : 14 जून 1920, म्यूनिख, जर्मनी में।
- **शिक्षा : हीडलबर्ग, बर्लिन और** गौटिंगेन विश्वविद्यालयों में कानून, इतिहास और अर्थशास्त्र का अध्ययन किया ।
- **प्रमुख कार्य** :
  - प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना (1905).
  - अर्थव्यवस्था और समाज (1922, मरणोपरांत)।
  - सामाजिक विज्ञान की पद्धति (1904-1917)।
  - चीन का धर्म (1915), भारत का धर्म (1916).
- **योगदान** : व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का विकास किया, नौकरशाही, प्राधिकरण और सामाजिक कार्रवाई जैसी अवधारणाओं को पेश किया और आर्थिक विकास में धर्म की भूमिका का विश्लेषण किया।

वेबर जर्मनी के तीव्र औद्योगिकीकरण और एकीकरण के दौर में रहते थे, जो नौकरशाही विस्तार और पूंजीवादी विकास से चिह्नित अवधि थी। कानून, अर्थशास्त्र और इतिहास में उनकी अंतःविषय पृष्ठभूमि ने समाजशास्त्र के प्रति उनके समग्र दृष्टिकोण को आकार दिया।

1.2 बौद्धिक प्रभाव

- **इमैनुअल कांट** : व्यक्तिपरक अर्थों और व्याख्यात्मक समझ पर वेबर के जोर को प्रभावित किया (वेरस्टेन)।
- **कार्ल मार्क्स** : वेबर मार्क्स के भौतिकवाद से जुड़े थे लेकिन उन्होंने सामाजिक परिवर्तन के चालकों के रूप में संस्कृति और विचारों पर ध्यान केंद्रित किया।
- **विल्हेम डिल्थे** : वेबर की व्याख्यात्मक पद्धति को आकार दिया, जिसमें मानवीय इरादों की समझ पर जोर दिया गया।
- **जर्मन ऐतिहासिकता** : वेबर के ऐतिहासिक विशिष्टता और तुलनात्मक विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करने को प्रभावित किया।

वेबर के कार्य ने समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान को जोड़ा तथा टैल्कॉट पार्सन्स, एंथनी गिडेंस और जुर्गन हेबरमास जैसे विचारकों को प्रभावित किया ।

2. वेबर की कार्यप्रणाली

2.1 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र और वेरस्टेन

वेबर ने तर्क दिया कि समाजशास्त्र को व्यक्तियों द्वारा अपने कार्यों से जोड़े जाने वाले व्यक्तिपरक अर्थों को समझना चाहिए, जो इसे प्राकृतिक विज्ञानों से अलग करता है। उनकी कार्यप्रणाली में शामिल हैं:

- **वेरस्टेन (समझ)** : सामाजिक कार्यों के पीछे के इरादों, उद्देश्यों और अर्थों की व्याख्या करें।
  - उदाहरण: यह समझने के लिए कि कोई कर्मचारी यूनियन में क्यों शामिल होता है, उसके विश्वासों और लक्ष्यों का विश्लेषण करना आवश्यक है।
- **आदर्श प्रकार** : वास्तविकता का विश्लेषण करने के लिए सामाजिक घटनाओं के अमूर्त, सरलीकृत मॉडल।
  - उदाहरण: वेबर की नौकरशाही का "आदर्श प्रकार" किसी विशिष्ट संगठन का वर्णन किए बिना उसकी प्रमुख विशेषताओं (जैसे, पदानुक्रम, नियम) को रेखांकित करता है।
- **ऐतिहासिक-तुलनात्मक विधि** : पैटर्न की पहचान करने के लिए समय और स्थान के पार समाजों की तुलना करें।
  - उदाहरण: सांस्कृतिक प्रभावों को समझने के लिए यूरोप और एशिया में पूंजीवाद की तुलना करना।

2.2 कार्य-कारण और बहु-कारण

दुर्खीम के एकल कारणों पर ध्यान केंद्रित करने के विपरीत, वेबर ने **बहु-कारणता पर जोर दिया** , जहां सामाजिक घटनाएं कई कारकों (जैसे, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक) से उत्पन्न होती हैं।

- उदाहरण: पूंजीवाद के उदय में आर्थिक स्थितियां (बाजार), सांस्कृतिक कारक (प्रोटेस्टेंट नैतिकता) और राजनीतिक स्थिरता शामिल थी।

2.3 मूल्य-मुक्त समाजशास्त्र

मूल्य-तटस्थता की वकालत की तथा समाजशास्त्रियों से आग्रह किया कि वे निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत विश्वासों को अनुसंधान से अलग रखें।

- **चुनौती** : पूर्ण तटस्थता कठिन है, क्योंकि शोधकर्ताओं के मूल्य विषय चयन को प्रभावित कर सकते हैं।
- **अनुप्रयोग** : जाति का पक्ष या विपक्ष में वकालत किए बिना उसका विश्लेषण करना।

आलोचनाएँ :

- वेरस्टेन का यह कथन व्यक्तिपरक है तथा इसे अनुभवजन्य रूप से सत्यापित करना कठिन है।
- आदर्श प्रकार जटिल वास्तविकताओं को अतिसरलीकृत कर सकते हैं।
- मूल्य-तटस्थता अप्राप्य है, क्योंकि वेबर का अपना कार्य उदारवादी पूर्वाग्रहों को प्रतिबिम्बित करता है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न वेरस्टेन , आदर्श प्रकार और मूल्य-तटस्थता (उदाहरण के लिए, जून 2017, दिसंबर 2020) का परीक्षण करते हैं।

3. प्रमुख अवधारणाएँ और सिद्धांत

3.1 सामाजिक कार्य

वेबर ने सामाजिक क्रिया को इस प्रकार परिभाषित किया है, "ऐसा व्यवहार जिसे व्यक्ति व्यक्तिपरक अर्थ देता है और जो दूसरों के व्यवहार को ध्यान में रखता है।" उन्होंने चार प्रकार की पहचान की:

- **साधनात्मक रूप से तर्कसंगत (ज़्वेकरैशनल)** : विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गणना किए गए साधनों द्वारा संचालित कार्रवाई।
  - उदाहरण: एक छात्र परीक्षा पास करने के लिए पढ़ाई करता है।
- **मूल्य-तर्कसंगत (वर्ट्रेशनल)** : परिणामों की परवाह किए बिना मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता से प्रेरित कार्रवाई।
  - उदाहरण: एक प्रदर्शनकारी न्याय के लिए गिरफ्तारी का जोखिम उठाता है।
- **भावात्मक** : भावनाओं से प्रेरित क्रिया।
  - उदाहरण: एक व्यक्ति चैरिटी का विज्ञापन देखने के बाद आवेग में आकर दान कर देता है।
- **पारंपरिक** : आदत या रीति से प्रेरित क्रिया।
  - उदाहरण: जाति-आधारित विवाह मानदंडों का पालन करना।

स्मृति सहायक : **स्पार्क** (व्यक्तिपरक, उद्देश्यपूर्ण, भावात्मक, तर्कसंगत , ज्ञान-आधारित)।

- **एस** : व्यक्तिपरक अर्थ.
- **पी** : उद्देश्यपूर्ण (वाद्यपूर्ण)।
- **उत्तर** : भावात्मक (भावनात्मक)।
- **आर** : तर्कसंगत (मूल्य-आधारित)।
- **K** : ज्ञान आधारित (पारंपरिक)।

अनुप्रयोग :

- आर्थिक निर्णयों से लेकर धार्मिक प्रथाओं तक विविध व्यवहारों की व्याख्या करता है।
- भारत में पारंपरिक क्रियाएं (जैसे, त्यौहार) तर्कसंगत क्रियाओं (जैसे, कॉर्पोरेट रणनीतियां) के साथ सह-अस्तित्व में रहती हैं।

दृश्य सहायता : सामाजिक कार्य प्रकारों की तालिका

प्रकार	प्रेरणा	उदाहरण
यंत्रवत तर्कसंगत	लक्ष्य उन्मुखी	परीक्षा की तैयारी में जुटे
मूल्य-तर्कसंगत	मूल्य/विश्वास	न्याय के लिए विरोध प्रदर्शन
उत्तेजित करनेवाला	भावनाएँ	आवेगपूर्ण दान
परंपरागत	आदत/रिवाज	जाति आधारित विवाह

आलोचनाएँ :

- प्रकारों के बीच ओवरलैप (जैसे, भावात्मक बनाम पारंपरिक)।
- अचेतन या संरचनात्मक प्रभावों की उपेक्षा करता है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्नों में अभ्यर्थियों से कार्रवाई के प्रकारों की पहचान करने या उन्हें परिदृश्यों पर लागू करने के लिए कहा जाता है (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2018, जून 2022)।

3.2 नौकरशाही

वेबर की नौकरशाही की अवधारणा आधुनिक समाजों के लिए उपयुक्त एक तर्कसंगत, पदानुक्रमित संगठन का वर्णन करती है।

3.2.1 नौकरशाही की विशेषताएं

- **पदानुक्रम** : आदेश की स्पष्ट श्रृंखला।
- **श्रम विभाजन** : विशिष्ट भूमिकाएँ।
- **लिखित नियम** : मानकीकृत प्रक्रियाएं स्थिरता सुनिश्चित करती हैं।
- **अवैयक्तिकता** : निर्णय व्यक्तिगत संबंधों पर नहीं, बल्कि नियमों पर आधारित होते हैं।
- **योग्यता आधारित भर्ती** : योग्यता के आधार पर चयन और पदोन्नति।
- **कैरियर संरचना** : निश्चित वेतन के साथ दीर्घकालिक रोजगार।

3.2.2 आदर्श प्रकार

वेबर की नौकरशाही एक **आदर्श प्रकार है** , यह कोई वास्तविक संगठन नहीं बल्कि वास्तविक प्रणालियों की तुलना करने के लिए एक मॉडल है।

- उदाहरण: भारत की सिविल सेवाएं (आईएएस) वेबर के मॉडल के करीब हैं, लेकिन भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं का सामना करती हैं।

3.2.3 लाभ

- दक्षता: मानकीकृत नियम त्रुटियों को कम करते हैं।
- पूर्वानुमानशीलता: विभिन्न संदर्भों में सुसंगत परिणाम।
- मापनीयता: बड़े संगठनों (जैसे, रेलवे) के लिए उपयुक्त।

3.2.4 नुकसान

- **लौह पिंजरा** : अति-तर्कसंगतीकरण व्यक्तियों को कठोर, अमानवीय प्रणालियों में फंसा देता है।
- लालफीताशाही: अत्यधिक नियम निर्णय लेने की प्रक्रिया को धीमा कर देते हैं।
- अलगाव: अवैयक्तिकता मानवीय संपर्क को कम करती है।

3.2.5 आधुनिक प्रासंगिकता

- नौकरशाही सरकार, निगमों और डिजिटल प्लेटफार्मों पर हावी है (उदाहरण के लिए, तकनीकी फर्मों में एल्गोरिथम शासन)।
- भारत में नौकरशाही शासन का केन्द्र बिन्दु है, लेकिन इसकी अकुशलता (जैसे सार्वजनिक सेवाओं में देरी) के लिए आलोचना की जाती है।

दृश्य सहायता : नौकरशाही का प्रवाह चार्ट

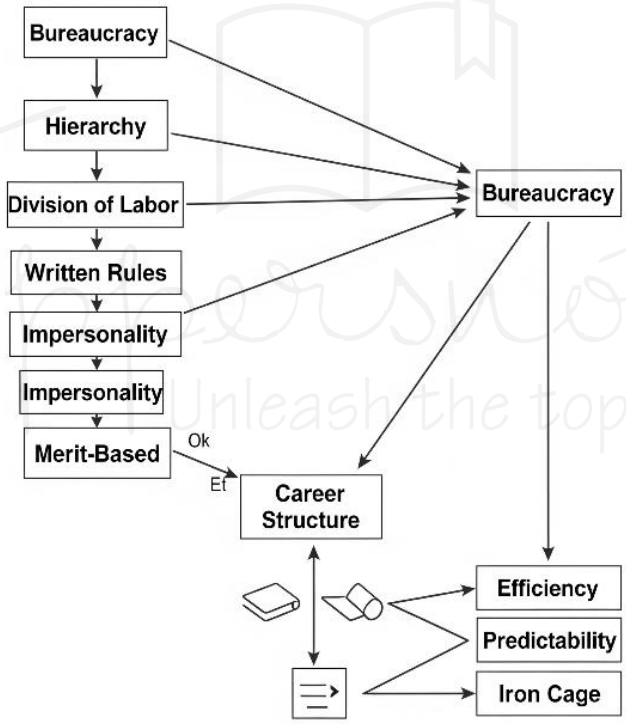

आलोचनाएँ :

- अनौपचारिक नेटवर्क की उपेक्षा करते हुए तर्कसंगतता पर अत्यधिक जोर दिया जाता है।
- नौकरशाही के भीतर सत्ता की गतिशीलता की उपेक्षा करता है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न नौकरशाही की विशेषताओं, लाभों या लौह पिंजरे पर केंद्रित होते हैं (उदाहरण के लिए, जून 2019, दिसंबर 2023)।

3.3 प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना

प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म (1905) में वेबर ने तर्क दिया कि प्रोटेस्टेंटवाद, विशेष रूप से केल्विनवाद ने यूरोप में पूंजीवाद के विकास को बढ़ावा दिया।

3.3.1 मुख्य तर्क

- **प्रोटेस्टेंट नैतिकता** : केल्विनवादी मान्यताओं (जैसे, पूर्वनियति, मोक्ष के संकेत के रूप में कड़ी मेहनत) ने अनुशासन, मितव्ययिता और लाभ संचय पर जोर देते हुए "पूंजीवाद की भावना" का निर्माण किया।

- **पूंजीवाद** : पारंपरिक अर्थव्यवस्थाओं से अलग, तर्कसंगत निवेश और लाभ द्वारा संचालित एक आर्थिक प्रणाली।
- उदाहरण: प्रोटेस्टेंट व्यापारी मुनाफे को पुनर्निवेशित करते थे, जबकि कैथोलिक अभिजात वर्ग फिजूलखर्ची करता था।

3.3.2 तंत्र

- **पूर्वनियति** : केल्विनवादियों का मानना था कि मोक्ष पूर्वनिर्धारित है, जिसके कारण चिंता उत्पन्न होती है।
- **कार्य को बुलावा** : कड़ी मेहनत और सफलता "चुने हुए" होने के संकेत थे।
- **तप** : मितव्ययिता और पुनर्निवेश ने पूंजी संचय को बढ़ावा दिया।

3.3.3 तुलनात्मक विश्लेषण

- वेबर ने प्रोटेस्टेंट यूरोप की तुलना गैर-पूंजीवादी एशिया (जैसे, चीन, भारत) से की, जहां कन्फ्यूशीवाद और हिंदू धर्म जैसे धर्मों में समान आर्थिक नैतिकता का अभाव था।
- वेबर ने कहा कि भारत में जातिवाद और कर्मकाण्डवाद पूंजीवादी तर्कसंगतता में बाधा डालते हैं।

3.3.4 आधुनिक प्रासंगिकता

- आर्थिक व्यवहार पर सांस्कृतिक प्रभावों की व्याख्या करता है (जैसे, कुछ समुदायों की उद्यमशीलता की सफलता)।
- भारत में जैन और पारसी समुदायों की कार्य नीति वेबर की थीसिस के अनुरूप है।

दृश्य सहायता : प्रोटेस्टेंट नैतिकता का आरेख

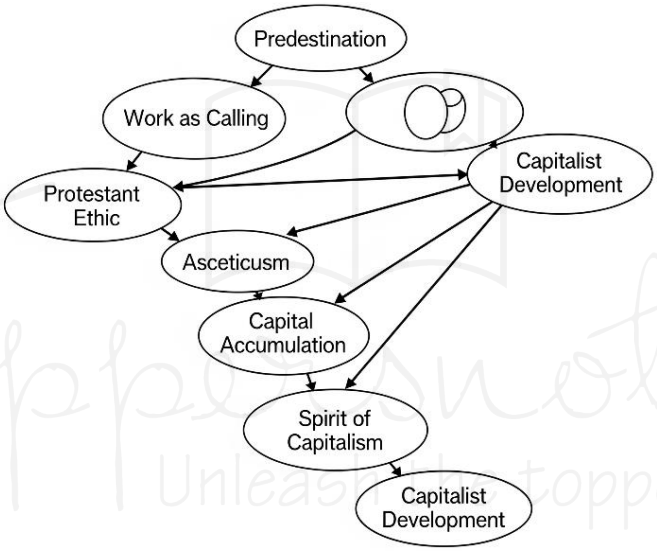

आलोचनाएँ :

- धर्म पर अत्यधिक जोर दिया जाता है तथा आर्थिक और राजनीतिक कारकों की उपेक्षा की जाती है।
- यूरोकेन्द्रित; गैर-प्रोटेस्टेंट क्षेत्रों में पूंजीवाद की उपेक्षा करता है।
- भारत में, आलोचकों का तर्क है कि वेबर ने स्वदेशी आर्थिक प्रणालियों को कम करके आंका।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न प्रोटेस्टेंट नैतिकता के पूंजीवाद से संबंध या अन्य धर्मों के साथ तुलना का परीक्षण करते हैं (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2017, जून 2021)।

3.4 प्राधिकरण

शासकों द्वारा अपनी शक्ति को उचित ठहराने के आधार पर तीन प्रकार के **वैध प्राधिकार (वैध प्रभुत्व) की पहचान की है:**

- **पारंपरिक अधिकार** : प्रथा और आदत पर आधारित।
  - उदाहरण: भारत में राजतंत्र, जाति पदानुक्रम।
  - विशेषताएं: स्थिर लेकिन परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी।
- **करिश्माई अधिकार** : एक नेता के असाधारण गुणों पर आधारित।
  - उदाहरण: भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधीजी का नेतृत्व।
  - विशेषताएं: गतिशील लेकिन अस्थिर, क्योंकि यह नेता पर निर्भर करता है।
- **विधिक-तर्कसंगत प्राधिकरण** : औपचारिक नियमों और प्रक्रियाओं पर आधारित।
  - उदाहरण: आधुनिक लोकतंत्र, नौकरशाही।

- विशेषताएँ: तर्कसंगत, अवैयक्तिक और अनुकूलनीय।

स्मृति सहायक : **टी.सी.एल.** (पारंपरिक, करिश्माई, कानूनी-तर्कसंगत)।

अनुप्रयोग :

- राजनीति, संगठनों और सामाजिक आंदोलनों में नेतृत्व की व्याख्या करता है।
- भारत में पारंपरिक सत्ता (जैसे, ग्राम पंचायतें) कानूनी-तर्कसंगत सत्ता (जैसे, संविधान) के साथ सह-अस्तित्व में है।

दृश्य सहायता : प्राधिकरण प्रकारों की तालिका

प्रकार	आधार	उदाहरण	स्थिरता
परंपरागत	रिवाज़	राजतंत्र, जाति	उच्च
करिश्माई	नेता के गुण	गांधीजी, धार्मिक गुरु	कम
कानूनी-तर्कसंगत	नियम/प्रक्रिया	लोकतंत्र, नौकरशाही	उच्च

आलोचनाएँ :

- प्रकार ओवरलैप हो सकते हैं (उदाहरण के लिए, कानूनी प्रणालियों का उपयोग करने वाले करिश्माई नेता)।
- नाजायज़ शक्ति (जैसे, जबरदस्ती) की उपेक्षा करता है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्नों में अभ्यर्थियों से प्राधिकरण प्रकारों को परिभाषित करने या उन्हें परिदृश्यों पर लागू करने के लिए कहा जाता है (उदाहरण के लिए, जून 2020, दिसंबर 2024)।

3.5 युक्तिकरण

वेबर ने **युक्तिकरण को** एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया है जिसके द्वारा आधुनिक समाज परंपरा या भावना के स्थान पर दक्षता, गणना और तर्क को प्राथमिकता देता है।

3.5.1 विशेषताएं

- **आर्थिक** : पूंजीवाद और बाजार का उदय।
- **राजनीतिक** : नौकरशाही शासन।
- **सांस्कृतिक** : धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक सोच।

3.5.2 परिणाम

- **मोहभंग** : जादुई या धार्मिक विश्वदृष्टिकोण का पतन।
- **लौह पिंजरा** : अति-तर्कसंगत प्रणालियाँ व्यक्तियों को कठोर संरचनाओं में फंसा देती हैं।

3.5.3 आधुनिक प्रासंगिकता

- युक्तिकरण डिजिटलीकरण (जैसे, शासन में एल्गोरिदम) और वैश्वीकरण की व्याख्या करता है।
- भारत में ई-गवर्नेंस में युक्तिकरण स्पष्ट है, लेकिन यह पारंपरिक प्रथाओं से टकराता है।

आलोचनाएँ :

- परंपरा के पतन को बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है; भारत में मजबूत सांस्कृतिक मानदंड कायम हैं।
- युक्तिकरण के प्रति प्रतिरोध की उपेक्षा करता है (जैसे, सामाजिक आंदोलन)।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न युक्तिकरण के प्रभाव या लौह पिंजरे पर केंद्रित हैं (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2019, जून 2023)।

4. समाजशास्त्र में वेबर का योगदान

4.1 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र

- वेबर के वेरस्टेन और आदर्श प्रकारों ने व्यक्तिपरक अर्थों को समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान की, तथा प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और परिघटना विज्ञान को आकार दिया।

4.2 तुलनात्मक समाजशास्त्र

- धर्म पर उनके अध्ययन (चीन का धर्म , भारत का धर्म) ने तुलनात्मक विश्लेषण का बीड़ा उठाया, जिसने वैश्विक समाजशास्त्र को प्रभावित किया।

4.3 संगठनात्मक समाजशास्त्र

- नौकरशाही और प्राधिकरण मॉडल संगठनों और शासन का अध्ययन करने के लिए आधारभूत हैं।

4.4 आधुनिक समाजशास्त्र में अनुप्रयोग

- **राजनीतिक समाजशास्त्र** : प्राधिकरण के प्रकार नेतृत्व की व्याख्या करते हैं (उदाहरण के लिए, मोदी की करिश्माई अपील)।
- **आर्थिक समाजशास्त्र** : प्रोटेस्टेंट नैतिकता उद्यमिता के अध्ययन को सूचित करती है।
- **डिजिटल समाजशास्त्र** : युक्तिकरण तकनीक-संचालित समाजों पर लागू होता है।

4.5 वेबर की आलोचनाएँ

- **यूरोकेन्द्रीयवाद** : पश्चिमी तर्कसंगतता पर अत्यधिक जोर देता है।
- **संघर्ष की उपेक्षा** : मार्क्स की तुलना में वर्ग संघर्ष पर कम ध्यान दिया गया।

- **जटिलता** : आदर्श प्रकार और बहुकारणता अमूर्त हो सकते हैं।

5. पीवाईक्यू विश्लेषण (2015-2025)

ugcnet.nta.ac.in से प्राप्त PYQ के आधार पर, वेबर एक उच्च-वेटेज विचारक है, जिसमें प्रति परीक्षा 4-6 प्रश्न होते हैं। सामान्य प्रश्न प्रकारों में शामिल हैं:

- वर्स्टेन , नौकरशाही या अधिकार की परिभाषाएँ ।
- सामाजिक क्रिया या प्रोटेस्टेंट नैतिकता के अनुप्रयोग।
- दुर्खीम या मार्क्स के साथ तुलना.

5.1 नमूना PYQs

- **जून 2017** : वेबर की कार्यप्रणाली में वेरस्टेन क्या है?
  - **उत्तर** : वेरस्टेन सामाजिक क्रियाओं के पीछे व्यक्तिपरक अर्थों की व्याख्यात्मक समझ है।
  - **व्याख्या** : वेबर की मूल कार्यप्रणाली अवधारणा का परीक्षण करता है।
- **दिसंबर 2018** : किस प्रकार की सामाजिक क्रिया में भावनात्मक प्रेरणा शामिल होती है?
  - **उत्तर** : भावात्मक क्रिया.
  - **व्याख्या** : सामाजिक क्रिया टाइपोलॉजी की समझ का परीक्षण करता है।
- **जून 2020** : आधुनिक लोकतंत्र में प्राधिकरण के प्रकार की पहचान करें।
  - **उत्तर** : कानूनी-तर्कसंगत प्राधिकार।
  - **स्पष्टीकरण** : प्राधिकरण प्रकारों के अनुप्रयोग का परीक्षण करता है।
- **दिसंबर 2021** : वेबर की प्रोटेस्टेंट नैतिकता पूंजीवाद की व्याख्या कैसे करती है?
  - **उत्तर** : केल्विनवादी मान्यताओं (पूर्वनियति, कार्य को बुलावा) ने अनुशासन और मितव्ययिता को बढ़ावा दिया, जिससे पूंजीवाद की भावना पैदा हुई।
  - **व्याख्या** : वेबर की प्रमुख थीसिस का परीक्षण करता है।
- **जून 2023** : वेबर के सिद्धांत में लौह पिंजरा क्या है?
  - **उत्तर** : अति-तर्कसंगतीकरण द्वारा निर्मित अमानवीय, कठोर प्रणालियों के लिए एक रूपक।
  - **स्पष्टीकरण** : युक्तिकरण के परिणामों की समझ का परीक्षण करता है।

5.2 रुझान और अपेक्षित प्रश्न

- **रुझान** : वैश्वीकरण में डिजिटल शासन और युक्तिकरण के लिए नौकरशाही की प्रासंगिकता पर बढ़ता ध्यान (2020-2025)। तुलनात्मक प्रश्न (जैसे, वेबर बनाम दुर्खीम) आम हैं।
- **अपेक्षित प्रश्न** :
  - वेबर के आदर्श प्रकार को परिभाषित करें और लागू करें।
  - युक्तिकरण भारतीय समाज को कैसे प्रभावित करता है?
  - पूंजीवाद पर वेबर और मार्क्स के विचारों की तुलना करें।

6. संशोधन के लिए मुख्य बिंदु

- **वेरस्टेन** : व्यक्तिपरक अर्थों की व्याख्यात्मक समझ।
- **सामाजिक क्रिया** : साधनात्मक तर्कसंगत, मूल्य-तर्कसंगत, भावात्मक, पारंपरिक (स्पार्क)।
- **नौकरशाही** : पदानुक्रमित, नियम-आधारित, अवैयक्तिक संगठन; दोष के रूप में लौह पिंजरा।
- **प्रोटेस्टेंट नैतिकता** : केल्विनवादी मान्यताओं ने पूंजीवाद की भावना को बढ़ावा दिया।
- **अधिकार** : पारंपरिक, करिश्माई, कानूनी-तर्कसंगत (टीसीएल)।
- **युक्तिकरण** : दक्षता और तर्क की ओर बदलाव; मोहभंग और लौह पिंजरे की ओर ले जाता है।

7. स्मृति सहायक और स्मृति सहायक

- **सामाजिक कार्य के लिए स्मृति सहायक** : **स्पार्क** (व्यक्तिपरक, उद्देश्यपूर्ण, भावात्मक, तर्कसंगत , ज्ञान-आधारित)।
- **अधिकार के लिए स्मृति सहायक** : **टी.सी.एल.** (पारंपरिक, करिश्माई, कानूनी-तर्कसंगत)।
- **नौकरशाही विशेषताओं के लिए स्मृति सहायक** : **HIRAM** (पदानुक्रम, अवैयक्तिकता, नियम, योग्यता द्वारा नियुक्ति)।

8. अभ्यास प्रश्न (एमसीक्यू)

- **वेबर के समाजशास्त्र में वेरस्टेन क्या है ?**

  a) सांख्यिकीय विश्लेषण

  b) व्याख्यात्मक समझ

  c) सामाजिक तथ्य

d) वर्ग संघर्ष

उत्तर : b) व्याख्यात्मक समझ

स्पष्टीकरण : वेरस्टेन क्रियाओं के व्यक्तिपरक अर्थों पर ध्यान केंद्रित करता है।

- **कौन सी सामाजिक क्रिया प्रथा से प्रेरित होती है?**

a) साधन-तर्कसंगत

b) मूल्य-तर्कसंगत

c) भावात्मक

d) पारंपरिक

उत्तर : d) पारंपरिक

व्याख्या : पारंपरिक क्रिया आदत या प्रथा का अनुसरण करती है।

- **लौह पिंजरे से तात्पर्य है:**

a) धार्मिक हठधर्मिता

b) कठोर नौकरशाही व्यवस्था

c) वर्ग उत्पीड़न

d) पारंपरिक अधिकार

उत्तर : b) कठोर नौकरशाही व्यवस्था

स्पष्टीकरण : अति-तर्कसंगतीकरण के अमानवीय प्रभाव का वर्णन करता है।

- **कौन सा अधिकार प्रकार गांधी के नेतृत्व की विशेषता है?**

a) पारंपरिक

b) करिश्माई

c) कानूनी-तर्कसंगत

d) नौकरशाही

उत्तर : b) करिश्माई

स्पष्टीकरण : गांधी के व्यक्तिगत गुणों के आधार पर।

- **प्रोटेस्टेंट नैतिकता किससे जुड़ी है:**

a) सामंतवाद

b) पूंजीवाद

c) समाजवाद

d) जाति व्यवस्था

उत्तर : b) पूंजीवाद

स्पष्टीकरण : पूंजीवाद की सांस्कृतिक जड़ों की व्याख्या करता है।

9. हालिया घटनाक्रम

- **डिजिटल इंडिया में नौकरशाही** : वेबर का मॉडल ई-गवर्नेंस (जैसे, आधार) पर लागू होता है, लेकिन डिजिटल विभाजन (2025) जैसे मुद्दों का सामना करता है।
- **युक्तिकरण** : तकनीकी फर्मों और स्मार्ट शहरों में एल्गोरिथम आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझाता है।
- **राजनीति में प्राधिकार** : कानूनी-तर्कसंगत प्रणालियों के साथ-साथ करिश्माई प्राधिकार भारतीय चुनावों में प्रासंगिक बना हुआ है।

3: कार्ल मार्क्स

1. कार्ल मार्क्स: जीवन और संदर्भ

1.1 जीवनी अवलोकन

- **जन्म** : 5 मई, 1818, ट्रियर, प्रशिया (आधुनिक जर्मनी)।
- **मृत्यु** : 14 मार्च, 1883, लंदन, इंग्लैण्ड में।
- **शिक्षा** : बॉन, बर्लिन और जेना विश्वविद्यालयों में कानून, दर्शनशास्त्र और इतिहास का अध्ययन किया; दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।
- **प्रमुख कार्य** :
  - कम्युनिस्ट घोषणापत्र (1848, फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ)।
  - दास कैपिटल (पूंजी), खंड 1 (1867), खंड 2-3 (मरणोपरांत)।
  - जर्मन विचारधारा (1846, एंगेल्स के साथ).

- 1844 की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियाँ (मरणोपरांत प्रकाशित)।
- **योगदान** : ऐतिहासिक भौतिकवाद का विकास किया, पूंजीवाद की गतिशीलता का विश्लेषण किया, तथा वर्ग संघर्ष और अलगाव का सिद्धांत प्रस्तुत किया।

मार्क्स औद्योगिक क्रांति के दौर में रहते थे, जो यूरोप में तेज़ आर्थिक बदलाव, शहरी गरीबी और श्रम शोषण का दौर था। प्रशिया, फ्रांस और इंग्लैंड में उनके अनुभवों ने पूंजीवाद की उनकी आलोचना और वर्गहीन समाज के लिए उनके दृष्टिकोण को आकार दिया।

1.2 बौद्धिक प्रभाव

- **जीडब्ल्यूएफ हेगेल** : मार्क्स ने भौतिक स्थितियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए हेगेल की द्वंद्वात्मकता (थीसिस-एंटीथीसिस-सिंथेसिस) को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद में रूपांतरित किया।
- **लुडविग फायरबाख** : धर्म और विचारधारा की मार्क्स की भौतिकवादी आलोचना से प्रभावित।
- **एडम स्मिथ और डेविड रिकार्डो** : मार्क्स के आर्थिक विश्लेषण को आकार दिया, हालांकि उन्होंने उनकी पूंजीवादी मान्यताओं की आलोचना की।
- **समाजवादी विचारक** : सेंट-साइमन जैसे काल्पनिक समाजवादियों ने मार्क्स के वर्गविहीन समाज के दृष्टिकोण को प्रेरित किया।

मार्क्स ने फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ मिलकर काम किया, जिनका वित्तीय सहयोग और बौद्धिक योगदान बहुत महत्वपूर्ण था। मार्क्स के काम ने समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान को प्रभावित किया, एंटोनियो ग्राम्स्की, लुइस अल्थुसर जैसे विचारकों और बीआर अंबेडकर जैसे भारतीय विद्वानों को प्रेरित किया ।

2. मार्क्स की कार्यप्रणाली

2.1 ऐतिहासिक भौतिकवाद

मार्क्स की कार्यप्रणाली, **ऐतिहासिक भौतिकवाद** , यह मानती है कि भौतिक (आर्थिक) परिस्थितियाँ समाज की संरचना, संस्कृति और इतिहास को आकार देती हैं। मुख्य सिद्धांतों में शामिल हैं:

- **आधार और अधिसंरचना** :
  - **आधार** : आर्थिक प्रणाली (उत्पादन के साधन और संबंध, जैसे, कारखाने, श्रम)।
  - **अधिरचना** : सामाजिक संस्थाएँ (जैसे, कानून, धर्म, शिक्षा) जो आधार को प्रतिबिंबित करती हैं और सुदृढ़ करती हैं।
  - उदाहरण: पूंजीवाद में, निजी संपत्ति (आधार) पूंजीपतियों (अधिसंरचना) के पक्ष में कानूनों को आकार देती है।
- **द्वंद्वात्मक भौतिकवाद** : सामाजिक परिवर्तन आर्थिक आधार के भीतर विरोधाभासों के माध्यम से होता है, जो संघर्ष के माध्यम से हल होता है।
  - उदाहरण: सामंतवाद के विरोधाभासों (जैसे, किसानों का शोषण) ने पूंजीवाद को जन्म दिया।
- **वर्ग संघर्ष** : ऐतिहासिक परिवर्तन का चालक, क्योंकि वर्ग (जैसे, पूंजीपति वर्ग बनाम सर्वहारा वर्ग) नियंत्रण के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।

2.2 आर्थिक नियतिवाद

मार्क्स ने तर्क दिया कि आर्थिक संबंध मुख्य रूप से सामाजिक घटनाओं को निर्धारित करते हैं, हालांकि उन्होंने विचारधारा और संस्कृति की गौण भूमिका को भी स्वीकार किया।

- उदाहरण: धर्म को "लोगों की अफीम" के रूप में देखना पूंजीवादी शोषण को उचित ठहराता है लेकिन इसकी जड़ में आर्थिक असमानता है।

2.3 पूंजीवाद की आलोचना

मार्क्स की पद्धति में पूंजीवाद के आंतरिक विरोधाभासों (जैसे, अधिशेष मूल्य निष्कर्षण) का विश्लेषण करके उसके पतन और समाजवाद में संक्रमण की भविष्यवाणी करना शामिल था।

- **उपकरण** : ऐतिहासिक विश्लेषण, आर्थिक आलोचना और वर्ग विश्लेषण।
- **उदाहरण** : शोषण को उजागर करने के लिए फैक्ट्री श्रमिकों का अध्ययन करना।

आलोचनाएँ :

- **आर्थिक न्यूनीकरणवाद** : अर्थशास्त्र पर अत्यधिक जोर देता है, संस्कृति और एजेंसी की उपेक्षा करता है।
- **ऐतिहासिक अपरिहार्यता** : यह मान लिया गया है कि समाजवाद अपरिहार्य है, तथा वैकल्पिक रास्तों की उपेक्षा की गई है।
- **सीमित अनुभवजन्य डेटा** : 19वीं सदी के यूरोप पर आधारित, औपनिवेशिक भारत जैसे गैर-औद्योगिक समाजों पर कम लागू।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न ऐतिहासिक भौतिकवाद, आधार-अधिरचना और वर्ग संघर्ष का परीक्षण करते हैं (उदाहरण के लिए, जून 2018, दिसंबर 2021)।

3. प्रमुख अवधारणाएँ और सिद्धांत

3.1 ऐतिहासिक भौतिकवाद

ऐतिहासिक भौतिकवाद मार्क्स का सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत है, जो समाज की नींव के रूप में आर्थिक स्थितियों पर जोर देता है।

3.1.1 उत्पादन के तरीके

उत्पादन के तरीकों (आर्थिक प्रणालियों) के आधार पर इतिहास के चरणों की पहचान की :

- **आदिम साम्यवाद** : सामुदायिक स्वामित्व, कोई वर्ग नहीं (जैसे, प्रारंभिक जनजातीय समाज)।
- **प्राचीन पद्धति** : दास-आधारित अर्थव्यवस्थाएँ (जैसे, रोम)।
- **सामंती व्यवस्था** : भूमि आधारित पदानुक्रम (जैसे, मध्ययुगीन यूरोप, भारतीय जमींदारी व्यवस्था)।
- **पूंजीवादी मोड** : मजदूरी श्रम और निजी पूंजी (उदाहरण, 19वीं सदी का यूरोप, आधुनिक भारत)।
- **समाजवादी/साम्यवादी मोड** : सामूहिक स्वामित्व वाला वर्गहीन समाज (भविष्य की दृष्टि)।

3.1.2 आधार-अधिसंरचना मॉडल

- **आधार** : उत्पादन के साधन (उपकरण, प्रौद्योगिकी) और उत्पादन संबंध (मालिक-श्रमिक गतिशीलता)।
- **अधिरचना** : सरकार, धर्म और शिक्षा जैसी संस्थाएँ जो आधार को वैध बनाती हैं।
- उदाहरण: भारत में, जाति विचारधारा (अधिरचना) ने ऐतिहासिक रूप से सामंती भूमि स्वामित्व (आधार) का समर्थन किया।

3.1.3 द्वंद्वात्मक परिवर्तन

- आधार के भीतर विरोधाभास (जैसे, श्रमिक शोषण) तनाव पैदा करते हैं, जिन्हें वर्ग संघर्ष के माध्यम से हल किया जाता है।
- उदाहरण: पूंजीपति वर्ग ने सामंती प्रभुओं को उखाड़ फेंका; सर्वहारा वर्ग पूंजीपतियों को उखाड़ फेंकेगा।

दृश्य सहायता : आधार-अधिसंरचना का आरेख

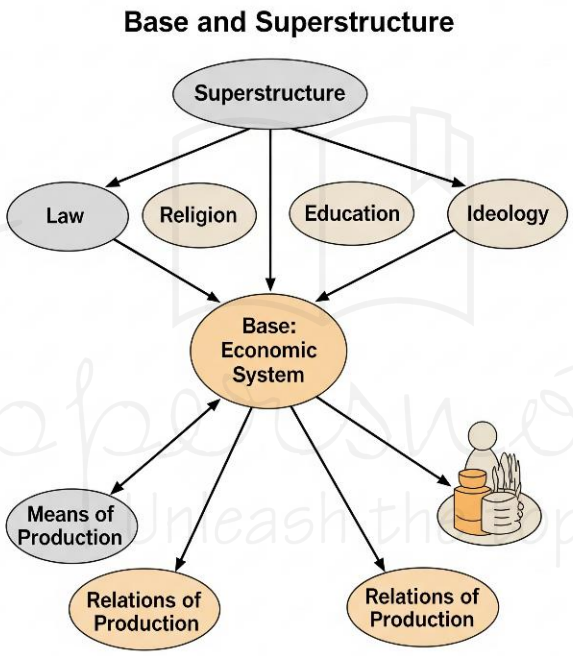

अनुप्रयोग :

- भारत में सामंतवाद (ज़मींदारी) से पूंजीवाद (स्वतंत्रता के बाद के बाज़ार) की ओर संक्रमण की व्याख्या करता है।
- भारतीय श्रम पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण (जैसे, गिग अर्थव्यवस्था)।

आलोचनाएँ :

- संस्कृति की भूमिका को अतिसरलीकृत करना; भारत में जाति केवल आर्थिक नहीं है।
- लिंग या जातीयता जैसे गैर-वर्गीय कारकों की उपेक्षा करता है।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न आधार-अधिरचना या उत्पादन के तरीकों पर केंद्रित होते हैं (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2019, जून 2023)।

3.2 वर्ग संघर्ष

मार्क्स ने **वर्ग संघर्ष को** इतिहास का इंजन माना, जहां विरोधी आर्थिक हितों वाले वर्ग संघर्ष करते हैं।

3.2.1 पूंजीवाद में वर्ग

- **पूंजीपति वर्ग** : पूंजीपति जो उत्पादन के साधनों के मालिक होते हैं (जैसे, कारखाना मालिक)।
- **सर्वहारा वर्ग** : वे श्रमिक जो मजदूरी के लिए श्रम बेचते हैं (जैसे, कारखाना मजदूर)।
- **पेटीट बुर्जुआजी** : छोटे पैमाने के मालिक (जैसे, दुकानदार), जो अक्सर पूंजीपति वर्ग से संबद्ध होते हैं।
- **लुम्पेनप्रोलिटेरिएट** : हाशिए पर पड़े, बेरोजगार समूह (जैसे, भिखारी), जिनके विद्रोह करने की संभावना नहीं होती।

3.2.2 गतिशीलता

- **शोषण** : पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग के श्रम से अधिशेष मूल्य (लाभ) निकालता है ।
- **वर्ग चेतना** : श्रमिकों में शोषण के प्रति जागरूकता विकसित होती है, जिससे सामूहिक कार्रवाई (जैसे, यूनियन, क्रांतियाँ) होती है।
- **क्रांति** : सर्वहारा वर्ग ने पूंजीपति वर्ग को उखाड़ फेंका, समाजवाद की स्थापना की।

3.2.3 अनुप्रयोग

- भारत में श्रमिक आंदोलनों (जैसे, कपड़ा श्रमिकों की हड़ताल) की व्याख्या करता है।
- आधुनिक गिग अर्थव्यवस्था के लिए प्रासंगिक, जहां श्रमिकों को कॉर्पोरेट शोषण का सामना करना पड़ता है।

दृश्य सहायता : कक्षाओं की तालिका

कक्षा	भूमिका	उदाहरण
पूंजीपति	उत्पादन के अपने साधन	फैक्टरी के मालिक
सर्वहारा	श्रम बेचें	कारखाने के मज़दूर
पेटिट बुर्जुआजी	छोटे पैमाने के मालिक	दुकानदार
लुम्पेनप्रोलिटेरिएट	हाशिए पर, बेरोजगार	भिखारी

आलोचनाएँ :

- भारत में जाति, लिंग या धर्म की उपेक्षा करते हुए वर्ग पर अत्यधिक जोर दिया गया है।
- वर्ग चेतना सार्वभौमिक नहीं है; श्रमिक पूंजीपति वर्ग (जैसे, राष्ट्रवाद) के साथ संरेखित हो सकते हैं।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न वर्ग परिभाषा, अधिशेष मूल्य या वर्ग चेतना का परीक्षण करते हैं (उदाहरण के लिए, जून 2020, दिसंबर 2022)।

3.3 अलगाव

1844 की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियों में , मार्क्स ने **अलगाव को** पूंजीवाद के तहत श्रमिकों की अलगाव के रूप में वर्णित किया।

3.3.1 अलगाव के प्रकार

- **श्रम के उत्पाद से** : श्रमिक जो उत्पादित करते हैं उसका स्वामित्व उनका नहीं होता (उदाहरण के लिए, एक फैक्ट्री श्रमिक का माल उसके मालिक का होता है)।
- **श्रम प्रक्रिया से** : काम दोहरावपूर्ण और अमानवीय है (उदाहरण, असेंबली लाइन)।
- **मानव सार से** : श्रमिक रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति (मानव "प्रजाति-प्राणी") खो देते हैं।
- **अन्य श्रमिकों से** : प्रतिस्पर्धा श्रमिकों को अलग-थलग कर देती है, एकजुटता को रोकती है।

स्मृति सहायक : **पीपीईडब्लू** (उत्पाद, प्रक्रिया, सार, श्रमिक)।

- **पी** : उत्पाद – कोई स्वामित्व नहीं।
- **पी** : प्रक्रिया - दोहरावपूर्ण कार्य।
- **ई** : सार - रचनात्मकता की हानि।
- **डब्ल्यू** : श्रमिक – अलगाव।

3.3.2 कारण

- निजी संपत्ति और उजरती श्रम श्रमिकों को उनके श्रम के फल से अलग कर देते हैं।
- श्रम विभाजन कार्य को यांत्रिक कार्यों तक सीमित कर देता है।

3.3.3 अनुप्रयोग

- भारत के अनौपचारिक क्षेत्र (जैसे, निर्माण श्रमिक) में श्रमिक असंतोष को स्पष्ट करता है।
- डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के लिए प्रासंगिक (उदाहरण के लिए, ऐप एल्गोरिदम द्वारा अलग-थलग किए गए गिग वर्कर)।

दृश्य सहायता : अलगाव का प्रवाह चार्ट

Unleash the topper in you

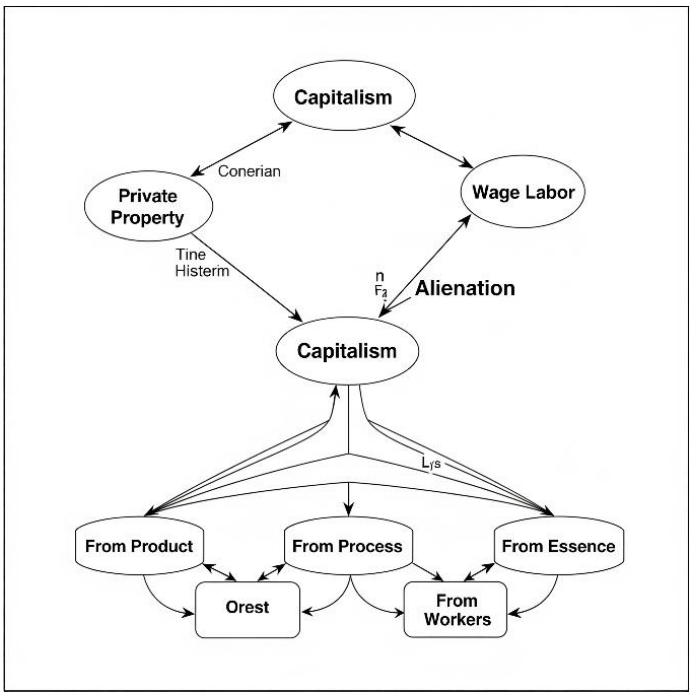

आलोचनाएँ :

- यह मान लिया गया है कि पूंजीवाद के तहत सभी काम अलगावकारी हैं; कुछ नौकरियां संतुष्टि प्रदान करती हैं।
- गैर-औद्योगिक समाजों या सेवा अर्थव्यवस्थाओं पर कम लागू।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न अलगाव के प्रकारों या कारणों पर केंद्रित होते हैं (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2018, जून 2021)।

3.4 पूंजीवाद और अधिशेष मूल्य

मार्क्स की दास कैपिटल पूंजीवाद की आर्थिक संरचना का विश्लेषण करती है, तथा लाभ के स्रोत के रूप में **अधिशेष मूल्य पर ध्यान केंद्रित करती है।**

3.4.1 प्रमुख अवधारणाएँ

- **वस्तु** : उपयोग-मूल्य (उपयोगिता) और विनिमय-मूल्य (बाज़ार मूल्य) वाली वस्तुएँ।
- **मूल्य का श्रम सिद्धांत** : किसी वस्तु का मूल्य उसके उत्पादन में लगे श्रम समय से निर्धारित होता है।
- **अधिशेष मूल्य** : श्रमिकों द्वारा उत्पादित मूल्य और पूंजीपतियों द्वारा विनियोजित उनकी मजदूरी के बीच का अंतर।
  - उदाहरण: एक श्रमिक ₹1000 मूल्य का माल उत्पादित करता है लेकिन ₹200 कमाता है; ₹800 अधिशेष मूल्य है।

3.4.2 शोषण

- पूंजीपति काम के घंटे बढ़ाकर या मजदूरी घटाकर अधिशेष मूल्य को अधिकतम करते हैं।
- मशीनरी और प्रौद्योगिकी श्रमिकों को अकुशल बनाकर शोषण को बढ़ाती है।

3.4.3 पूंजीवाद के विरोधाभास

- **अतिउत्पादन** : पूंजीपति बाजार की क्षमता से अधिक उत्पादन करते हैं, जिससे संकट पैदा होता है।
- **लाभ की गिरती दर** : मशीनरी के उपयोग में वृद्धि से श्रमिकों का हिस्सा कम हो जाता है, जिससे लाभ कम हो जाता है।
- **वर्ग ध्रुवीकरण** : बढ़ती असमानता सर्वहारा क्रांति को बढ़ावा देती है।

3.4.4 अनुप्रयोग

- भारत की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के बारे में बताया गया है, जहां कम मजदूरी अधिशेष मूल्य को अधिकतम करती है।
- विकासशील देशों में श्रम का शोषण करने वाली वैश्विक कंपनियों के लिए प्रासंगिक।

आलोचनाएँ :

- मूल्य का श्रम सिद्धांत मूल्य निर्धारण में मांग और नवाचार की भूमिका की उपेक्षा करता है।
- उन्नत पूंजीवादी देशों में क्रांति नहीं हुई है जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी।

PYQ प्रासंगिकता : प्रश्न अधिशेष मूल्य, शोषण या विरोधाभासों का परीक्षण करते हैं (उदाहरण के लिए, जून 2019, दिसंबर 2023)।

3.5 विचारधारा और मिथ्या चेतना

मार्क्स **विचारधारा को** ऐसे विचारों के रूप में देखते थे जो शोषण को छुपाते हुए शासक वर्ग के प्रभुत्व को उचित ठहराते हैं।

- **मिथ्या चेतना** : श्रमिक पूंजीवादी विचारधारा को स्वीकार करते हैं, लेकिन अपने शोषण को पहचानने में असफल रहते हैं।
  - उदाहरण: यह विश्वास करना कि कड़ी मेहनत संरचनात्मक बाधाओं के बावजूद सफलता की गारंटी देती है।
- **अनुप्रयोग** : भारत में, मीडिया और शिक्षा पूंजीवादी मूल्यों को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे वर्ग चेतना में बाधा उत्पन्न हो सकती है।